2 निःस्वार्थ प्रेम

प्रस्तावना ➡ 'सौतेली माँ' शब्द सुनते ही मन में एक क्रूर निर्दयी माँ की तस्वीर घूम जाती है परन्तु इसका भी अपवाद होता है। कई माँ अपनी सौतेली संतान को सगी सन्तानों से भी ज्यादा प्यार करके एक नया इतिहास रचती हैं।

प्रतिबिंब ➡ इस कहानी में 'सौतेली माँ' के निःस्वार्थ प्रेम के बारे में बताया गया है कि कैसे एक माँ कदम-कदम पर बच्चों से तिरस्कार झेलते हुए भी अपना निश्चित प्रेम बच्चों पर न्यौछावर करती है।

परिकल्पना ➡ कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य दो तरह के होते हैं- अच्छे या बुरे। यह जरूरी नहीं है कि जो बदनाम है या बुरे है, उनमें से हर व्यक्ति एक जैसा ही हो।

आज राधा को रमा (सौतेली माँ) की बहुत याद आ रही थी, क्योंकि आज उसको इस बात का अहसास हो चुका था कि उसने और उसके दो भाई-बहनों ने रमा को कितना तंग किया और रमा ने पलटकर कभी कुछ नहीं कहा, बल्कि उन तीनों बच्चों को अपनी जान से ज्यादा प्यार दिया। इन बच्चों के प्यार में कमी न आ जाए इसलिए उसने अपने बच्चे को जन्म देने के बारे में सोचा तक नहीं। लेकिन इन बच्चों से उसको हमेशा तिरस्कार ही मिला। आज राधा को वह दिन याद आ रहा था जिस दिन रमा इस घर में विवाह करके आई थी। ये शादी उसकी मर्जी के खिलाफ नहीं थी। तीन बच्चों की बात सुनकर भी रमा ने विवाह से इन्कार नहीं किया बल्कि सहृदय रमा ने इस वैवाहिक जीवन को सहज स्वीकार कर लिया। लेकिन रवि, राधा और महक ने रमा को कभी अपनी माँ की नजर से नहीं देखा। हमेशा उसे अपना दुश्मन समझते रहे क्योंकि रमा के आने के बाद उन्हें लगने लगा था कि उनके पिता जी का ध्यान उनकी तरफ कम हो गया है। कुछ आस-पड़ोस के लोगों ने उनके कान में भर दिया कि पिताजी की जायदाद के कारण तुम्हारी दूसरी माँ ने विवाह किया है। ये बात बच्चों के बाल-मन में बस गई। रमा को घर से निकालने के लिए नई-नई तरकीबें सोचते रहते और रमा की झूठी शिकायतें पिताजी से करते रहते। लेकिन मनोहर लाल जी को बच्चों की बातों पर यकीन नहीं होता था क्योंकि वे रमा को अच्छी तरह जानते थे और यह भी जानते थे कि रमा बच्चों को अपनी जान से ज्यादा प्यार करती है, और कभी उसने मनोहर लाल जी से बच्चों को लेकर कोई शिकायत नहीं की बल्कि स्वयं ही बच्चों की तरफ से उनसे माफी माँग लेती थी। विशाल हृदय की स्वामिनी रमा अपने पति से कहती, क्या ये बच्चे मेरे नहीं है? यकीन मानिए मुझे इनकी किसी बात का बुरा नहीं लगता। मेरे स्वयं के बच्चे यदि ऐसे होते तो क्या मैं उनको प्यार न देती। मनोहर लाल जी निःशब्द रह जाते। ऐसे नतमस्तक हो जाते जैसे किसी देवी के सामने सिर झुकाए खड़े हों। रमा के प्रति उनका हृदय श्रद्धा से भर जाता। वे सोचते यह औरत त्याग, सहनशीलता और प्रेम की प्रतिमूर्ति है। लेकिन

रमा के प्रति बच्चों का इतना कड़वा व्यवहार देखकर, तड़प जाते थे। मनोहर लाल जी बच्चों को समझाते कि ''बच्चो! रमा तुम्हारी माँ है और वो तुम लोगों से कितना प्रेम करती है।'' लेकिन बच्चों के कान पर जूँ तक न रेंगती।

इसी-तरह समय बीतता रहा और तीनों बच्चे अपने-अपने पैरों पर खड़े हो गए। एक-एक करके मनोहर लाल जी ने तीनों बच्चों का विवाह कर दिया। रवि विदेश में रहने लगा। राधा और महक अपने-अपने ससुराल चली गईं। तीनों बच्चों के जाने के बाद मनोहर लाल जी और रमा बिल्कुल अकेले हो गए थे। मनोहर लाल जी को बीमारियों ने आ घेरा। अब रमा का पूरा दिन पति की सेवा में व्यतीत होता था। एक दिन सेठ मनोहर लाल जी भी इस दुनिया में रमा को बिल्कुल तन्हा छोड़कर हमेशा के लिए सो गए। अब तो रमा के दुःखों का कोई अंत न था। पति के सामने तो फिर भी बच्चों की खबर मिल जाती थी अब तो वो आस भी टूट गई। पति के अंतिम संस्कार में तीनों बच्चे शामिल हुए लेकिन रमा से उन्होंने बात तक नहीं की।

आज पहली बार राधा को अपनी माँ की कमी महसूस हो रही थी। सोचते-सोचते राधा को पता ही नहीं चला कब से अश्रुधारा उसकी आँखों से बह रही है। उसने तुरंत फोन उठाया और रमा को फोन किया। राधा ने कहा, ''माँ! कैसी हो?'' 'माँ' शब्द सुनकर रमा तो जड़वत् हो गई। आज पहली बार उसने माँ शब्द सुना था। कोई उत्तर नहीं दे पा रही थी राधा को। राधा ने दुबारा कहा, ''माँ!'' रमा ने अपने ऊपर संयम रखकर कहा - ''हाँ, बेटी मैं रमा बोल रही हूँ।'' राधा आगे बोली, ''माँ! मुझे माफ कर दो मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया है।

आज मुझे इस बात का अहसास हो चुका है।'' राधा रो-रो कर रमा से कह रही थी। इधर रमा के भी आँसू [illegible] का नाम नहीं ले रहे थे। राधा ने महक और रवि को भी इस बात का अहसास करा दिया था कि वे लोग कितने गलत थे। राधा की बात सुनकर रवि और महक भी बेहद पछताने लगे। वे भी रमा से माफी माँगने के लिए बेताब हो रहे थे। महक और रवि ने भी फोन पर रमा से बात की। रमा को मानो पंख ही लग गए थे। आज उसे अपने पति की याद आ रही थी कि वे होते तो कितने खुश होते।

इधर तीनों बहन-भाई योजना बनाकर अपनी माँ से मिलने अपने-अपने आशियानों से निकल पड़े, जिसकी कीमत आज उन्होंने पहचानी थी। रास्ते में भी राधा रमा के बारे में ही सोचते हुए आ रही थी कि इस औरत के साथ हमारा खून का रिश्ता नहीं है मगर फिर भी हमें हमारी सगी माँ से भी बढ़कर प्यार दिया और एक हम हैं कि हमेशा उनका तिरस्कार ही किया, फिर भी इस औरत के दिल में जरा-सा भी रोष या शिकायत नहीं है। कैसी औरत है ये? साक्षात् देवी का रूप है उसकी माँ, राधा सोच रही थी कि दुनिया में कोई ऐसा इन्सान भी हो सकता है। सभी व्यक्ति किसी न किसी रिश्ते से जुड़कर एक-दूसरे को इतना प्रेम करते हैं लेकिन यहाँ तो यह बात बिल्कुल उलटी ही निकली। 'सौतेले' शब्द की तो परिभाषा ही बदल डाली थी रमा ने, जिसका प्रेम बिना किसी दिखावे के एकदम निःस्वार्थ था। विरले ही होते हैं ऐसे इन्सान, जिनके आगे स्वतः ही नतमस्तक हो जाते हैं हम।

—'बीना ठाकुर'

शिक्षण संकेत – अपनी कक्षा में सभी बच्चों को (सगी माँ हो या सौतेली माँ) सबसे प्रेम करने और उनका आदर करने की प्रेरणा दीजिए।

पढ़िए और लिखिए – निःस्वार्थ, निश्छल, तिरस्कार, क्रूर, निर्दयी, सहृदय, संयम, निःशब्द, प्रतिमूर्ति, अश्रुधारा, जड़वत्, साक्षात्, विरले, नतमस्तक।

शब्दार्थ :- **क्रूर** – निर्दयी (cruel), **निःस्वार्थ** – बिना स्वार्थ के (selfish less), **तिरस्कार** – अपमान (insult), **सहृदय** – कोमल मन (tender hearted), **वैवाहिक जीवन** – विवाह के बाद का जीवन (married life), **सहर्ष** – खुशी-खुशी (happily), **विशाल हृदय** – बड़ा हृदय (great heart), **जायदाद** – सम्पत्ति (property), **निःशब्द** – बिना शब्द के (speech less), **त्याग** – बलिदान (sacrifice), **सहनशीलता** – सहन करना (tolerance), **प्रतिमूर्ति** – मूर्ति जैसी (like idol), **अश्रुधारा** – आँसू (tear), **जडवत्** – जड़ हो जाना (like root), **योजना** – कार्यक्रम (programme), **साक्षात् देवी** – देवी की तरह (goddess), **विरले** – बिल्कुल अलग (rarest), **नतमस्तक** – सर झुकाना (down head), **तन्हा** – अकेला (lonely).

संकलित मूल्यांकन

ब दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. मनोहरलाल जी और रमा अकेले कैसे हो गए थे?
2. बच्चे जब रमा की शिकायत करते तो मनोहर लाल जी की क्या प्रतिक्रिया होती थी ?
3. बच्चे रमा से नफ़रत क्यों करते थे?
4. राधा को जब गलती का अहसास हुआ तो उसने रमा से क्या कहा?
5. राधा के समझाने पर रवि व महक की क्या प्रतिक्रिया थी ?

ह विकल्पीय प्रश्न

सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए –

. रमा का हृदय कैसा था?

(अ) क्रूर ( ) (ब) कठोर ( ) (स) सहृदय (✓) (द) कोई नहीं ( )

. अधिकतर 'सौतेली माँ' के बारे में लोगों की धारणा है –

(अ) वह क्रूर व निर्दयी होती है। (✓) (ब) वह विशाल हृदय की स्वामिनी होती है। ( )

(स) उनका प्रेम निःस्वार्थ होता है। ( ) (द) इनमें से कोई नहीं ( )

. रमा किसकी प्रतिमूर्ति थी –

(अ) त्याग, सहनशीलता और प्रेम की। (✓) (ब) क्रूर, निर्दयी और कठोरता की। ( )

(स) कड़वे व्यवहार की। ( ) (द) इनमें से कोई नहीं ( )

क्या राधा को अपनी गलती का अहसास हो गया था?

(अ) हाँ (✓) (ब) नहीं ( ) (स) पता नहीं ( ) (द) कभी नहीं ( )

मनोहर लाल जी रमा के सामने –

(अ) घुटने टेक देते थे ( ) (ब) नतमस्तक हो जाते थे (✓) (स) प्रणाम करते थे ( ) (द) कोई नहीं ( )

आशय स्पष्ट कीजिए –

कान भरना - चुगली करना

2. कान पर जूँ तक न रेंगना – कुछ भी ध्यान न देना ।

पाठ - 2 निःस्वार्थ सेवा

प्रश्न - उत्तर

(क)

उ०1 मनोहर लाल जी के तीन बच्चे थे।

उ०2 रमा, रवि, मटक और राधा की सौतेली माँ थी।

उ०3 रमा बच्चों से अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करती थी।

उ०4 बच्चों से रमा को हमेशा तिरस्कार ही मिला।

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

उ०1 एक-एक करके मनोहर लाल जी ने तीनों बच्चों का विवाह कर दिया। रवि विदेश चला गया। राधा और मटक अपने-अपने ससुराल चली गई। तीनों बच्चों के जाने के बाद मनोहर लाल जी व रमा बिल्कुल अकेले हो गए थे।

उ०2 मनोहर लाल जी को बच्चों की शिकायतों पर यकीन नहीं होता था वो रमा को अच्छी तरह जानते थे और यह भी जानते थे कि रमा बच्चों को अपनी जान से ज्यादा प्यार करती है।

उ०3 बच्चों को लगता था कि रमा के आने के बाद उनके पिताजी का ध्यान उनकी तरफ कम हो गया है तथा कुछ आस-पड़ोस के लोगों ने भी उनके कान भर दिए थे कि पिताजी की जायदाद के कारण तुम्हारी दूसरी माँ ने विवाह किया है। इसलिए बच्चे रमा से नफरत करते थे।

उ०4 राधा को जब गलती का अहसास हुआ तो उसने रमा को "माँ" कह कर संबोधित किया और बोली, "माँ, मुझे माफ कर दो मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया है। आज मुझे इस बात का अहसास हो चुका है।

उ०5 राधा ने समझाकर रवि और महक को भी इस बात का अहसास करवा दिया था कि वे लोग कितने गलत थे, राधा की बात सुनकर वे भी बेहद पछताने लगे। वे भी रमा से माफी माँगने के लिए बेताब हो रहे थे।